शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

उत्तर भारत में मध्यकालीन कृष्ण संबंधी चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन (राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में)

बीज शब्द :

राजस्थानी चित्रकला, मध्यकालीन कला, कृष्ण चित्र, भारतीय संस्कृति।

राजस्थानी चित्रकला समुन्नत चित्रकला है। यह लेख राजस्थानी चित्रकला एवं उनकी उप शैलियों के मध्यकालीन चित्रकारों द्वारा चित्रित कृष्ण चित्रों पर आधारित है। इन कृष्ण चित्रों का चित्रगत तत्वों (रेखागत आंकलन, रूपगत आंकलन, रंगगत आंकलन, तानगत आंकलन, पोतगत आंकलन एवं अंतराल) के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें इन चित्रों की विशेषताएँ उजागर हुई हैं।

*****

राम किशोर
शोध छात्र, ड्राइंग एण्ड पेण्टिंग विभाग
डी0 ए-वी0 कालेज, कानपुर
E-mail : ramkishor.rama0123@gmail.com

उत्तर भारत में मध्यकालीन कृष्ण संबंधी चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन (राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में)

उत्तर भारत कला की दृष्टि से समृद्ध माना जाता है, क्योंकि यह मौर्य, गुप्त, मुगल एवं ब्रिटिश साम्राज्यों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में इसका महत्व और बढ़ जाता है। भारतीय चित्रकला मध्यकाल का ऐसा युग था जब समाज में कलाव्यसन एवं कलाकारों का समागम गौरव का विषय समझा जाता था। इस क्षेत्र में निरन्तर छोटे-छोटे युद्ध होते रहते थे, नयी-नयी शासन सत्ताएँ स्थापित होती रहती थीं, किन्तु सभी शासन व्यवस्थाओं में कला एवं साहित्य को समुचित आदर एवं सम्मान प्राप्त हुआ। वे इसकी समुन्नति एवं उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे और यही नहीं ये शासन सत्ताएँ एक दूसरे की प्रतिस्पर्धा में होड़ लगाकर अपने राज्याश्रय में कलाकृतियों का निर्माण करवाते थे, जो उस समय उनके गौरव एवं प्रतिष्ठा की सूचक थी। उस समय समाज में कलावेत्ताओं का प्राधान्य हो गया था। कलाकार, सामान्तों के आश्रय में रहकर विभिन्न कला की रीतियों और शैलियों के अनुसार सूक्ष्मातिसूक्ष्म सजावट एवं पच्चीकारी के साथ चित्रांकन किया करते थे।

उत्तर भारत में मध्यकालीन कलाकारों द्वारा चित्रित की गई तत्कालीन चित्राकृतियाँ विभिन्न स्थानों में विभिन्न शैलियों में बनायी गयी हैं। ये चित्र विभिन्न राज्याश्रयों के विशेष आदर एवं सम्मान प्राप्त चित्रकारों द्वारा चित्रित किए गये हैं, जैसे - राजस्थान में अनेक राजस्थानी शैलियाँ विकसित हुई, दिल्ली क्षेत्र में मुगल शासकों का साम्राज्य रहा अतः वहाँ मुगल आश्रय दाताओं के आश्रय में रहकर कलाकारों ने चित्रांकन किया। इसी प्रकार पूरे पहाड़ी क्षेत्र के पहाड़ी राज्याश्रयों में चित्रकला की विभिन्न पहाड़ी शैलियाँ प्रस्फुटित एवं पल्लवित हुईं।

प्रस्तुत शोध लेख में राजस्थान क्षेत्र से प्राप्त कृष्ण चित्रों का कलागत तत्त्वों के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है

समीक्षात्मक आँकलन के चित्रगत तत्त्व :-

चित्र अर्थात संयोजन रूपप्रद तत्त्वों का एक ऐसा आयोजन है, जो दर्शक के चाक्षुष सन्तुलन को स्थिर रखता है एवं कलाकार के मस्तिष्क की सहज व सूक्ष्म अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है। चाक्षुष कलाओं में जिन तत्त्वों का संयोजन किया जाता है वे हैं- रेखा, रूप, वर्ण, तान, पोत और अन्तराल। चित्र द्वि-आयामी चित्रभूमि पर इन तत्त्वों का संयोजन है। चित्र के तत्त्व चाक्षुष होते हैं और सीधे आँखों को प्रभावित करते हैं। चित्र तत्त्वों की यह व्यवस्था चित्रकार की शैली, तत्कालीन प्रचलित शैली तथा पारम्परिक शैली का निर्धारण करती हैं।

रेखागत आँकलन :-

चित्र भूमि में चाहे रेखा का अंकन किया गया हो अथवा किसी रूप को रंगों द्वारा सीधे स्थापित किया गया हो, रेखा का अस्तित्त्व स्वतः निर्मित हो जाता है। रेखा के बिना रूप का अस्तित्त्व नहीं है। यह प्राचीन मान्यता है। चित्र सूत्र में रेखा को चित्र गुणों में सर्व प्रथम आवश्यक माना है।[1] चित्रकला का आदि रूप रेखांकन है। चित्र का पूर्वांग होते हुए भी बिना रंग के ऐसे रेखांकन अपने आप में सम्पूर्ण होते हैं। भारतीय कला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण रूपगत एवं शैलीगत तत्त्व रेखीय लय है और यह प्रत्येक सृजन की विशेषता है।[2]

राजस्थानी मध्यकालीन कृष्ण संबंधित भित्ति चित्रों, पाण्डुलिपि चित्रों एवं छुट-पुट चित्रों में रेखा का प्राधान्य एवं प्रभुत्व झलकता है। रेखा भाव, कलेवर, छाया प्रकाश, संयोजन, गतिमयता एवं सिद्धहस्तता के श्रोतों से गुजरती है, जिसमें तत्कालीन चित्रकार अपनी चातुर्य-साधना से उसका प्रयोग कर विशेष शैली के अन्तर्गत डाल देता है। यहाँ के तत्कालीन चित्रों में रेखा आकृति, वास्तु, प्रकृति एवं पशु-पक्षियों में इस प्रकार प्रयुक्त हुई है कि चित्र स्वयं ही हृदय ग्राही हो जाता है। यहाँ के चित्रों में इसे निम्नलिखित विशेषताओं के साथ देखा जा सकता है :-

1- यांत्रिक रेखांकन।
2- अलंकारिक रेखाकंन।
3- सहज रेखांकन।

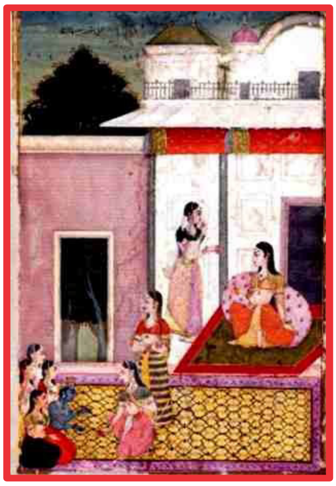

चित्र सं0-1 "KRISHNA COMES TO VISIT RADHA"

---

1. रेखा च वर्तना चैव भूषणम् वर्णमेव च। रेखा प्रशंसंत्याचार्या वर्तना च विचक्षणः- चित्रसूत्रम् सम्मेलन पत्रिका, पृ0 सं0- 458
2. राय, निहार रंजन - भारतीय कला का अध्ययन- दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लि0, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0-135

1- **यांत्रिक रेखांकन :-**
यंत्रों की सहायता से रेखाओं को अंकित करना यांत्रिक रेखांकन कहलाता है। रेखा की सहायता से समतल की पुनरावृत्ति तथा अन्तराल का विभिन्न तलों में विभाजन किया जाता है, चित्रों के हाशिये भी इन्हीं रेखाओं द्वारा खींचे जाते हैं। इनका उपयोग सौन्दर्यात्मक प्रस्तुती करण के लिए होता है।

देखें राजस्थान से प्राप्त बीकानेर शैली का चित्र सं0-1 "KRISHNA COMES TO VISIT RADHA" इस चित्र में ज्यामितीय रेखाओं का प्रयोग किया गया है। चित्र के अग्रपृष्ठ को ज्यामितीय आकारों द्वारा सुसज्जित किया गया है तथा मध्य भाग में ज्यामितीय यन्त्रों की सहायता से महल का चित्रण कर पृष्ठ भाग को अलग किया गया है। चित्र के चारों तरु ज्यामितीय रेखाओं द्वारा हॉशिया बनाकर चित्र को आकार प्रदान किया गया है।

इसी प्रकार राजस्थान से प्राप्त किशनगढ़ शैली का चित्र सं0-2 "A COURTLY PARADISE" में भी यांत्रिक रेखाओं द्वारा सम्पूर्ण चित्र को विभाजित एवं संयोजित कर सौन्दर्य प्रदान किया गया है।

चित्र सं0-2 "A COURTLY PARADISE"

2- **अलंकारिक रेखांकन :-**
राजस्थानी मध्यकालीन चित्रकारों द्वारा चित्रित किये गये चित्रों में अलंकारिक रेखाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है। चित्रों में वास्तु, आकार, वस्त्रांकन, आभूषण, चित्र तल विभाजन, प्रकृति चित्रण आदि को दिखाने के लिए अलंकारिक रेखांकन का प्रयोग किया गया है।

ज्यादातर मध्यकालीन चित्रों हेतु प्रकृति चित्रण में अलंकारिक रेखाओं का प्रयोग किया गया है। जहाँ कहीं पर जल का चित्रण हुआ है उसमें प्रवाह (लहर) का प्रभाव लाने के लिये भी लयात्मक रेखाओं का प्रयोग किया गया है। कुछ कलाकृतियों में सुन्दर पंक्तियाँ भी लिखी गयी हैं जिनमें प्रत्येक अक्षर अलंकारिक है।

चित्र सं0-3 "''कालिया की कुण्डली में कृष्ण''

राजस्थान से प्राप्त मेवाड़ शैली का चित्र, चित्र सं0-3 ''कालिया की कुण्डली में कृष्ण'' में अलंकारिक रेखाओं का प्रयोग कर चित्र को संयोजित किया गया है। इस चित्र में कालिया नाग को रूप प्रदान करने के लिये सुन्दर अलंकारिक लयात्मक रेखाओं का प्रयोग किया गया है तथा जल के प्रवाह को तीव्र करने के लिये एवं मानवाकृतियों में तल को अलग करनें के लिये लयात्मक रेखा का प्रयोग कर चित्र को सौन्दर्य प्रदान कर संयोजित किया गया है।

चित्र सं0 4 ''कालिया के फन पर नृत्य करते हुये कृष्ण''

इसी प्रकार मेवाड़ शैली का दूसरा चित्र, चित्र सं0 4 ''कालिया के फन पर नृत्य करते हुये कृष्ण'' में जल के प्रवाह, कालिया नाग व नागिन एवं मानवाकृतियों में भी अलंकारिक लयात्मक रेखा का प्रयोग चित्रकार ने किया है। इस चित्र में भी तल विभाजन हेतु अलंकारिक लयात्मक रेखा का प्रयोग कर चित्र को संयोजन प्रदान किया गया है।

मेवाड़ शैली का चित्र, चित्र सं0 5 'बसंतोत्सव मनाते हुए नृत्यरत कृष्ण' एवं चित्र सं0 6 'Krishna Swallowing the

Forest Fire' में चित्र के ऊपर भाग में सुन्दर पंक्तियाँ लिखी गयी हैं जिनमें प्रत्येक अक्षर लयात्मकता लिये हुए लिखा गया है एवं इन चित्रों में भी मानवाकृतियों व तल विभाजन में अलंकारिक लयात्मक रेखाओं का प्रयोग कर चित्र को संयोजित किया गया है।

चित्र सं0 5 ''बसंतोत्सव मनाते हुए नृत्यरत कृष्ण''

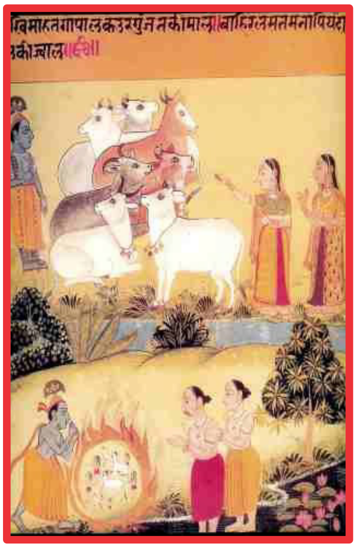

चित्र सं0 6 ''KRISHN SWALLOWING THE FOREST FIRE''

३.- सहज रेखांकन :-

सहज रेखांकन चित्रकार के लिए अभिव्यंजना का सहज साधन है। इसका सीधा संबंध मन, कल्पना तथा मानस चेतना है। इसी से रेखांकन के रूप में गति पैदा होती है, जिस पर हमारा ध्यान सहज ही जाता है। यह परम्परा राजस्थान से प्राप्त कुछ चित्रों में भी दृष्टिगोचर है।

देखें मेवाड़ शैली का चित्र, चित्र सं0 6 ''KRISHN SWALLOWING THE FOREST FIRE'' इसमें कृष्ण की नजरें बिना किसी रेखा के ऐसा प्रतीत होती हैं कि गोपिकाओं एवं गायों से जुड़ी हैं। यह रेखांकन एक कल्पना तथा मानस चेतना है।

इसी प्रकार किशनगढ़ शैली का एक चित्र, चित्र सं0 7 ''राधा एवं गोपिकाओं के साथ रंग खेलते कृष्ण'' में कृष्ण एवं राधा की भावमय दृष्टि एक दूसरे को पिरो देती है जिससे एक काल्पनिक रेखा का आभास प्रतीत होता है। चित्रकार ने ऐसा संयोजन कर चित्र में गति उत्पन्न की है।

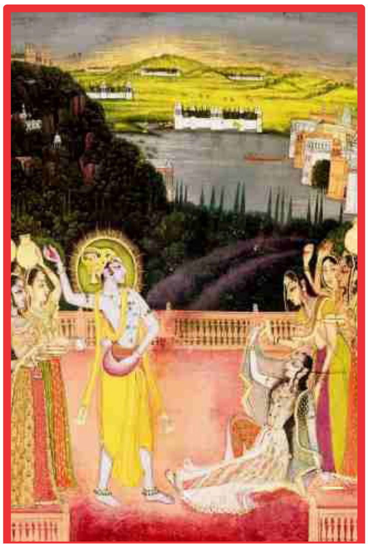

चित्र सं0 07 राधा एंव गोपिकाओं के साथ रंग खेलते कृष्ण

चित्र संख्या-8 ''गोवर्धन पर्वत उठाये हुए कृष्ण''

रूपगत ऑकलन :-

रेखा रंग तथा संयोजन के प्रमुख सिद्धान्तों द्वारा रूप का निर्माण होता है। रूप अगर सौन्दर्यपरक क्षमता से युक्त एवं अभिव्यक्तपरक है, तो वह कलात्मक हो जाता है। प्रत्येक रूप के तीन मुख्य तत्त्व होते हैं - 1. आकार, 2. आकृति, 3. वर्ण।[3] आकार से वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई एवं मोटाई का बोध होता है। आकृति बनावट है, जिसके आधार पर रूप एक दूसरे से भिन्न होते हैं एवं अलग-अलग पहचान बनाते हैं। वर्ण वस्तु या रूप की रंगत का प्रभाव बताता है। यथा काला, नीला, पीला आदि। इस प्रकार रूप एक क्षेत्र है जो आकृति एवं वर्ण के गुण से युक्त होता है। रूपों की भिन्नता के लिये उपर्युक्त तीनों उत्तरदायी हैं।

देखें कोटा शैली में प्राप्त चित्र, चित्र संख्या-8 'गोवर्धन पर्वत उठाये हुए कृष्ण' में चित्रकार ने विभिन्न रूपों का चित्र भूमि पर संयोजन किया है जिसमें कृष्ण, बलराम, ग्वाल-ग्वालिन, गाय और हाथी हैं इसमें चित्रकार ने रूप का रूप से संबंध बहुत ही कुशलता से प्रस्तुत किया है तथा आसमान में मेघों का रूप व बारिस का रूप अंकित कर चित्र को क्रियाशील करते हुये उचित वातावरण प्रस्तुत करके चित्र को संयोजित किया है। जिससे चित्र सौन्दर्यमय दिखायी पड़ता है।

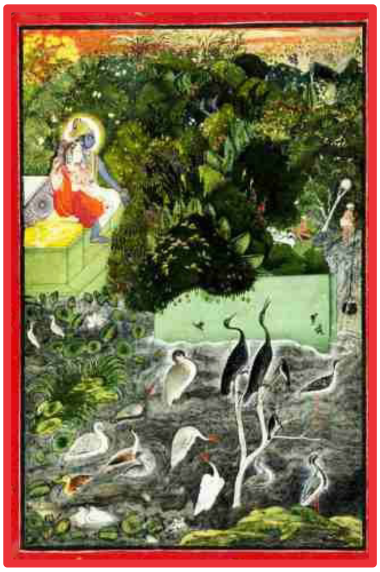

चित्र सं0-9 ''सूर्यास्त के समय राधा एवं कृष्ण झील के किनारे''

3. चोयल, बी0 एन0 एवं अग्रवाल, आर0 ए0 - चित्र संयोजन,- इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृष्ठ सं0- 27

इसी प्रकार कोटा शैली का एक और चित्र, चित्र सं0-9 'सूर्यास्त के समय राधा एवं कृष्ण झील के किनारे' में विभिन्न रूपों को अंकित कर चित्र में सूर्यास्त के समय का वातावरण प्रस्तुत किया है। इस चित्र में झील व पक्षियों का रूप तथा पेड़ पौधों के मध्य चबूतरे पर बैठे कृष्ण व राधा का रूप एवं सायंकालीन आकाश का रूप एक दूसरे से इस प्रकार संबंध रखते हैं कि एक भी रूप के हटने से चित्र अधूरा हो जाय। इस प्रकार सभी क्रियाशील रूप तथा निष्क्रिय स्वरूप एक दूसरे को सहयोग प्रदान करते हैं। मुख्य स्वरूप के पीछे निष्क्रिय स्वरूप (प्राकृतिक स्वरूप) पूरे संयोजन को विशेष अर्थ प्रदान कर रहा है।

रंगगत ऑकलन :-

रंग या वर्ण चित्र की वह नाड़ी है जो उसे स्तरीय पुष्टता प्रदान करती है। भारतीय चित्रकला में वर्ण का महत्व उसकी दार्शनिकता एवं धर्म के साथ जुड़ा है। आयु, प्रकृति, स्तर एवं वातावरण इसके साथ प्रमुख रूप से कार्य करते हैं। बूढ़े, बच्चे, युवा, राक्षस, देव, किन्नर, देवी, राजा-रानी, दासी, सेवक आदि अलग-अलग वर्ण से पहचाने जा सकते हैं। इनमें स्वाभाविकता के साथ-साथ मान्यता भी जुड़ी है। भारतीय कला में वर्ण की प्रमुखकता आरम्भ से देखने को मिलती है।

राजस्थानी मध्यकालीन कृष्ण संबंधी चित्रों में चित्रकार ने कृष्ण को नीले रंग एवं बलराम को गौर रंग तथा राधा एवं गोपिकाओं को गेहुँए रंग और चित्र सं0-10 'KRISHNA KILLING BULL DEMON ARISTHA' में राक्षस, अरिस्था (साँड़) को गौर वर्ण से चित्रित किया है।

चित्र सं0-10 ''KRISHNA KILLING BULL DEMON ARISTHA''

मानवाकृतियों से अलग प्रकृति के सभी चर-अचर में रंगों का समावेश भली भाँति हुआ है। समय प्रकृति एवं प्रवृत्ति इससे पूर्णतः स्पष्ट हुई है। यहाँ के चित्रों में वर्ण के प्रयोग में तूलिका के संचालन की भूमिका इस प्रकार रही है कि उसने वर्ण में बल

तो दिया ही है साथ ही साथ सौन्दर्यात्मक रूप को भी उभारा है। यहाँ पर किये गये चित्रण में परिप्रेक्ष्य एवं सुघड़ता है। चित्रकार ने रंगों का प्रयोग बहुत ही नियोजित ढंग से किया है, सहयोगी रंगों के साथ विरोधी रंगों का प्रयोग बहुत ही सुंदर हुआ है। चित्रों में एक ओर जहाँ नीले, पीले, लाल, हरे रंगों की विरोधी रंग योजना उत्तेजना उत्पन्न करती है, वहीं आसमानी, बादामी रंगते चित्र में सामन्जस्य का प्रभाव देती हैं। चित्र में लगे पारदर्शी रंग शेष रंगों को एक सूत्रता में बाँधते हैं।

देखें चित्र सं0 -3 'कालिया की कुण्डली में कृष्ण'

देखें चित्र सं0 -07 'राधा एवं गोपिकाओं के साथ रंग खेलते कृष्ण।

देखें चित्र सं0 -11 'कृष्ण राधा से चर्चा करते हुए।

तानगत आँकलन :- रंग या वर्ण छाया प्रकाश से प्रभावित होकर अपना तान बदलता है। रंगों की विभिन्न तानों द्वारा ही चित्र में गोलाई, दूरी, छाया प्रकाश का प्रभाव दिखाया जाता है। राजस्थानी शैली के मध्यकालीन कृष्ण संबंधी बनाये गये चित्रों में तान का प्रयोग प्राकृतिक वातावरण को दिखाने हेतु बहुत ही कुशलता के साथ किया गया है जिससे वातावरणीय परिप्रेक्ष्य स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। साथ ही चित्रकारों ने कृष्ण की आकृति चित्रण में भी तान का प्रयोग प्रमुखता से किया है। यहाँ के चित्रों में दिखाये गये छाया प्रकाश को भी तान का प्रयोग कर अंकित किया गया है। यहाँ के चित्रों में चित्रित किये गये बादलों में भी तान का प्रयोग स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

देखें चित्र सं0- 4 ''कालिया के फन पर नृत्य करते कृष्ण''

देखें चित्र सं0- 7 ''राधा एवं गोपिकाओं के साथ रंग खेलते कृष्ण''

चित्र सं0 -11 'कृष्ण राधा से चर्चा करते हुए।'

पोतगत आँकलन :-

पोत के माध्यम से कलाकार रूप (फार्म) में विभिन्न प्रकार के ब्रश-आघातों से चित्र में रंग की एक रसता को दूर करके चित्रगत सौन्दर्य उत्पन्न करता है तथा रूपगत सौन्दर्य की अलंकारिता में वृद्धि करता है। पोत संयोजन में दृष्टिगत उथल-पुथल पैदा कर, कम एवं अधिक मान वाले रंगों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। राजस्थानी मध्यकालीन कृष्ण संबंधी चित्रों में भी पोत के विभिन्न स्वरूप परिलक्षित होते हैं। चित्रतल पर एक रूप को दूसरे रूप से पृथक करने के लिए उत्पन्न किया गया है।

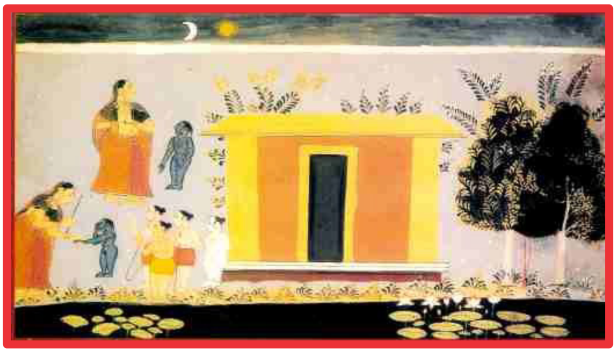

चित्र सं0 12 ''यशोदा का कृष्ण के मुँह में पृथ्वी माता का देखना''

चित्र में प्रदर्शित अप्रत्यक्ष धरातल (पृथ्वी, आकाश, जल, वृक्ष, फूल, पत्ती एवं वास्तु) एवं अप्रत्यक्ष धरातल में वृद्धि हेतु उनमें छाया-प्रकाश एवं उतार चढ़ाव प्रदर्शन के लिये विभिन्न प्रकार के पोत प्रयुक्त हुए हैं। देखें चित्र (चित्र सं0 12 ''यशोदा का कृष्ण के मुँह में पृथ्वी माता का देखना'') में कृष्ण के नीले रंग के शरीर पर सीधे ब्रश से उनका अलंकरण एवं देवी यशोदा के वस्त्रों में डिजाइन एवं अंगों में अलंकार, आकाश में गाढ़े रंग के ऊपर ब्रश द्वारा पीले रंग से सीधे ब्रश आघात एवं जमीन के हल्के रंग पर गाढ़े रंग से ब्रश द्वारा घास का प्रभाव उत्पन्न किया गया है।

देखें किशनगढ़ शैली का चित्र, चित्र सं0 13 ''गोपिकाओं के साथ नृत्य करते कृष्ण'' में भी कलाकार ने पोत का प्रयोग कर चित्र में सौन्दर्य प्रदान किया है। आसमान के चित्रण हेतु धरातल पर गाढ़े नीले रंग को लगाकर उसके ऊपर हल्के नीले रंग से ब्रश आघात कर बादलों का चित्रण किया है। इसी प्रकार पेड़ों के चित्रण में भी चित्रकार ने गाढ़े रंग को लगाकर उस पर हल्के रंग से पत्तियों का चित्रण किया है, इसी प्रकार जल को दिखाने

के लिये गाढ़े नीले रंग को लगाकर उस पर हल्के रंग द्वारा ब्रश आघात किया है। इस प्रकार चित्रकार ने चित्र में पोत का प्रयोग कर सौन्दर्यात्मक संयोजन किया है।

अन्तराल :- किसी भी धरातल या अन्तराल पर रूप (फार्म) बनते ही अन्तराल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अथवा सक्रिय एवं सहायक दो भागों में विभाजित हो जाता है। चित्र में अप्रत्यक्ष धरातल प्रत्यक्ष धरातल की पृष्ठभूमि निर्मित कर उसे सौन्दर्य प्रदान करता है तथा उसकी प्रभाविता एवं सार्थकता में वृद्धि करता है, साथ ही निश्चित धरातल के खालीपन को दूर करता है। दोनों प्रकार के अन्तराल का चित्र सौन्दर्य में गहरा योगदान होता है। अन्तराल व्यवस्था के थोड़े से परिवर्तन से चित्र का मूलाकार बदल जाता है एवं उसके बौद्धिक व संवेदनात्मक प्रभाव में भी परिवर्तन आ जाता है। धरातल पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष धरातल के समुचित गठन से चित्र में सौन्दर्य के साथ-साथ डिजाइन की उत्पत्ति होती है एवं अभिव्यक्तपरक समुचित अन्तराल-व्यवस्था से चित्र में गति, प्रमाण, सन्तुलन, विरोधाभास व केन्द्रीयता के गुण प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।[4] ये गुण किसी भी चित्र के मापक माप दण्ड होते हैं।

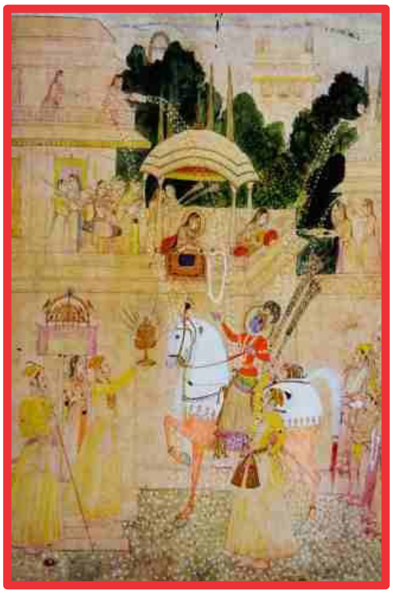

चित्र सं0 13 ''गोपिकाओं के साथ नृत्य करते कृष्ण''

राजस्थानी मध्यकालीन कृष्ण संबंधी चित्रों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही अन्तराल सक्रिय हैं। दोनों में ही रेखा, रंग, रूप, तान एवं पोत अपने-अपने रूपगत सौन्दर्य के साथ विद्यमान हैं, लेकिन अप्रत्यक्ष अन्तराल के रेखा, रंग, रूप, तान, पोत प्रत्यक्ष अन्तराल को आधार प्रदान करने के साथ उसे केन्द्रीयता एवं प्रमुखता प्रदान करते हैं। यहाँ के चित्र (चित्र सं0- 07 ''राधा एवं गोपिकाओं के साथ रंग खेलते कृष्ण'') में प्रत्यक्ष अन्तराल के रूप में कृष्ण राधा एवं गोपिकाओं की भावमय आकृति या रूप, लययुक्त, गतिमय रेखाओं, नीले, हरे, पीले, लाल, गुलाबी, सुनहले रंग सफेद रंग तथा उनके तान से आच्छादित हैं। चित्र में कृष्ण व गोपिकाओं के द्वारा खेले जाने वाले रंग व राधा-कृष्ण व गोपिकाओं के नेत्रों को भावमय दृष्टि द्वारा जोड़कर पूरे प्रत्यक्ष धरातल को एक दूसरे के साथ पिरो देती हैं, जिससे संयोजन में स्वयं ही गति आ जाती है। चित्र में अप्रत्यक्ष धरातल यानी प्राकृतिक दृश्य एवं प्रत्यक्ष धरातल रंगों एवं उनके तान के माध्यम से एक दूसरे के साथ अच्छा संबंध बनाये हुये हैं। चित्र में वातावरणीय परिप्रेक्ष्य तान के माध्यम से एक दम स्वाभाविक प्रतीत होता है। चित्र के प्रत्यक्ष धरातल पर लगे पीले, नीले एवं धानी रंग अप्रत्यक्ष धरातल में चित्रित प्राकृतिक दृश्य में लगाकर चित्र में वर्णमय सामंजस्य उपस्थित किया गया है। हरे एवं पीले रंग का बिखराव प्राकृतिक सौन्दर्य को बिखेरता है, साथ ही रंग के विभिन्न तान परिप्रेक्ष्य की संरचना कर चित्र को नन्दतिक सौन्दर्य प्रदान करते हैं। प्रत्यक्ष धरातल पर लगे गर्म रंगों के बीच मैत्री भाव उत्पन्न कर प्रमुख विषय को केन्द्रीयता प्रदान करते हैं। महलों में लगा श्वेत रंग राधा के वस्त्रों में लगे श्वेत रंग के कारण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष धरातल के बीच वर्णगत सन्तुलन निर्मित करता है।

कुछ चित्रों में चित्रकार ने एक ही धरातल पर अनेक विषयों, जो अपने आप में अलग-अलग पूर्ण हो सकते थे, को अलग-अलग एक ही धरातल पर चित्रित किया है, जिससे एक ही धरातल पर अनेक केन्द्र बिन्दु हो गये हैं। इस प्रकार प्रत्यक्ष धरातल अनेक भागों में विभक्त हो गया है और अप्रत्यक्ष अन्तराल ने प्रत्यक्ष अन्तराल के सारे भागों को एक ही में संजोया है। चित्रकार ने इस प्रकार ही अन्तराल व्यवस्था में संयोजन के सिद्धांतगत तत्त्वों गति, प्रमाण, प्रभावित, सन्तुलन, सामन्जस्य एवं विरोधाभास को नहीं भुलाया है।

देखें चित्र सं0 -6 "KRISHNA SWALLOWING THE FOREST FIRE" में संयोजन का केन्द्र बिन्दु एक ही नहीं, एक से ज्यादा है। एक ही चित्र में कृष्ण संबंधी दो लीलाएं चित्रित हैं, दोनों भागों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अन्तराल सक्रिय हैं एवं दोनों अपने आप में एक संयोजन है।

यहाँ के चित्रों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि चित्रों मे आकर्षण, मौलिकता और प्रभावित करने की क्षमता है। ये चित्र भाव पक्ष से सीधा संबंध रखते हैं। इन चित्रों में धार्मिक भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। चित्रों में सशक्त व

4. चोयल, बी0 एन0 एवं अग्रवाल, आर0 ए0 - चित्र संयोजन,- इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृष्ठ सं0 - 20

लयात्मक रेखांकन, सुरूचिपूर्ण रंग विधाान एवं स्थितिजन्य लघुता दिखाई देती है। यहाँ के चित्रों में सरलता और सौन्दर्यात्मकता सर्वत्र दर्शनीय है। चित्रकारों ने श्रेष्ठ कृतियों का चित्रण कर उस समय की कला निधि को अमर बना दिया है। ये चित्र पौराणिक कथाओं, कृष्ण चरित्र और उनके सामान्य जन-जीवन, लीलाओं एवं धार्मिकता को भावनात्मकता एवं रहस्यात्मकता से प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन कलागत तत्त्वों के आधार पर विद्वत जनों के समक्ष प्रस्तुत होगा जो कि समाज को एक नई दृष्टि प्रदान करेगा।

◆◆◆

(पृष्ठ 90 का शेष) **पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर के..........**

गया। दूसरे शब्दो में, Z के तालिका मूल्य में 449 (d.f) के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक मान का मान 1.96 है। इस प्रकार गणना मूल्य (7.01), तालिका मूल्य से सार्थक रूप से ज्यादा है। अत: हम शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करेंगें और निष्कर्ष निकलेगा की पूर्वोत्तर रेलवें के कार्मिक कल्याणकारी योजनाओं से संतुष्ट हैं।

निष्कर्ष - प्रस्तुत शोध के परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर मुख्यालय के कर्मियों की कार्य संतुष्टि उनके कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। परिणाम का उचित सांख्यिकी विश्लेषण कर तालिका में प्रदर्शित किया गया है। कर्मियों की कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावशीलता से अनुकूलता के स्तर को प्राप्त करते है, क्योकि उनका माध्य 36 से अधिक हैं अर्थात 39.96 हैं जो औसत सें अधिक है। अत: स्पष्टता कहा जा सकता है कि कार्मिक कल्याण ाकारी योजनाओं की प्रभावशीलता से संतुष्ट हैं ।

सुझाव -

(1) रेलवे अस्पताल में डाक्टरों की संख्या में वृद्धि की जाय एवं अस्पताल में जो सुविधा नहीं है उसे बाहर के अस्पतालों में अपने खर्चों पर उपलब्ध कराई जाए।

(2) गोरखपुर मुख्यालय में कैन्टीन की सुविधाओं में गुणात्मक सुधार की जाए ।

(3) कर्मियों के रहने के आवास की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(4) कर्मियों के बच्चों के शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

(5) वर्तमान समय में संविदा के द्वारा जो नियुक्तियाँ हो रही है उन्हें भी कार्मिक कल्याण प्रावधान में शामिल करना चाहिए। जिससे उनकी कार्य की गुणवत्ता बढ़ सके।

(6) पूर्वोत्तर रेलवे के पार्को का रख-रखाव एवं सुविधाओं का समुचित विकास किया जाना चाहिए।

(7) कर्मियों को भोजन के समय मनोरंजन की व्यवस्था होनी चाहिए।

जैसे- कैरम, म्यूजिक, शतरंज, गेम इत्यादि।

(8) कर्मियों के लिए शौचालय एवं मूत्रालय की व्यवस्था बेहतर किया जाए।

(9) गोरखपुर मुख्यालय के कारखानों में कर्मियों के लिए शुद्ध पेयजल, नहाने, कपड़े धोने एवं विश्राम की समुचित व्यवस्था की जाए।

◆◆◆